UNIVERSITY OF CAMBRIDGE INTERNATIONAL EXAMINATIONS
International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE NAME			
CENTRE NUMBER		CANDIDATE NUMBER	

5870593238

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/01**

Paper 1 Reading and Writing **May/June 2009**

2 hours

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.
Write in dark blue or black pen.
Do not use staples, paper clips, highlighters, glue or correction fluid.
DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

At the end of the examination, fasten all your work securely together.
The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

For Examiner's Use	
Section 1	
Section 2	
Total	

This document consists of **12** printed pages.

SP (LEO/TL) V00496/3
© UCLES 2009

UNIVERSITY of CAMBRIDGE International Examinations

[Turn over

खंड 1

अभ्यास 1 प्रश्न 1-5.

बाल मित्र ग्राम एक नूतन अवधारणा पर आलेख पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

बाल मित्र ग्राम, एक नूतन अवधारणा

वयस्क और बच्चे मिल कर बांस का एक ध्वज खड़ा करने का प्रयास कर रहे थे। सफेद सूती ध्वज जिस पर बाल मित्र ग्राम अंकित था, उसे फहराते हुए उनके उत्साह और उमंग का ठिकाना नहीं था। यह एक बेहद गर्व भरा पल था विशेषकर रामचन्द्रपुर के ग्रामवासियों के लिए। अवसर था रामचन्द्रपुर को बाल मित्र ग्राम घोषित किए जाने का। बच्चों और बड़ों सभी का उत्साह देखते बनता था। यह चमत्कार उन सामाजिक कार्यकर्ताओं और ग्रामवासियों की वजह से संभव हो पाया जिनका मानना था कि उनके बच्चों को भी किसी अन्य बच्चे के समान बेहतर शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है।

बिहार राज्य की राजधानी पटना से लगभग 50 किलोमीटर दूर बसा रामचन्द्रपुर एक आम गाँव है जिसकी आबादी में मुख्यत पिछड़े वर्ग के लोग और आदिवासी लोग शामिल हैं। यहाँ सबसे पहले उठाए कदम में सभी बच्चों को काम से हटा कर गाँव के समीप एक स्कूल में भर्ती कर लिया गया। अगला कदम था स्कूल में बाल पंचायत का गठन जिसका उद्देश्य स्कूल के सामने आने वाली कठिनाइयों जैसे पुस्तकों की अनुपलब्धि आदि का समाधान करना था।

इसी प्रकार राजस्थान के पापड़ी गाँव में किए गए प्रयासों के अंतर्गत यह सुनिश्चित करना था कि कोई भी बच्चा काम पर न जाए यह अवधारणा भारत के कई राज्यों जैसे बिहार, राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में सफलतापूर्वक साकार रूप ले चुकी है। इन्होने आदर्श बाल मित्र ग्राम के विकास के लिए चौतरफा युक्ति अपनाई है जिसमें गाँव से बाल श्रम का उन्मूलन, सभी बच्चों का स्कूलों में दाखिला, बाल पंचायतों का गठन तथा वयस्कों की पंचायत में बच्चों की बातों और माँगों पर गौर किया जाना शामिल है।

बाल मित्र ग्राम के प्रयास का अनूठापन गाँव के बाल वर्ग की सक्रिय भागीदारी द्वारा अपने लिए पंचायतों, समुदायों, स्कूलों और परिवारों में वैध अधिकार हासिल करना और लोगों के सामर्थ्य, शक्ति व स्थानीय संसाधनों का प्रयोग इसकी सफलता और अविच्छिन्नता का एक महत्वपूर्ण कारण है। बाल मित्र ग्राम लिंग समानता पर भी बल देता है जो वास्तव में सराहनीय है। बाल पंचायत में बाल नेताओं के चुनाव में लड़कियों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। यह देखा गया है कि बाल संसद का नेतृत्व अधिकतर लड़कियाँ करती हैं। वे ही अपने कल्याण तथा विकास संबंधी मामलों को वयस्कों की पंचायत में उठाती हैं।

For Examiner's Use

1 किस भावना के फलस्वरूप रामचन्द्रपुर को बाल मित्र ग्राम घोषित किया?

.... [1]

2 रामचन्द्रपुर की आबादी में प्रमुख हिस्सा किन लोगों का है?

.... [1]

3 बच्चों की पंचायत क्यों बनाई गई?

.... [1]

4 बाल पंचायत को स्थापित करने के पीछे प्रमुख प्रेरणा क्या थी? किसी एक पहलू को लिखिए।

.... [1]

5 बाल मित्र ग्राम की अवधारणा ने लड़कियों की भागीदारी के लिए कौन से नए विकल्प खोले? किन्ही दो पहलूओं को लिखिए।

.... [2]

[अंक: 6]

अभ्यास 2 प्रश्न 6

शालिनी गुप्ता की उम्र 17 वर्ष है। वह मुस्कान अपार्टमेंट के 35 न. मकान में रहती हैं। यह अपार्टमेंट दिल्ली के मयूर विहार इलाके में स्थित है। उनका दूरभाष 23555759 है। उन्हें लगभग 9 साल की उम्र से क्रिकेट खेलने का शौक है। वह अपने स्कूल में क्रिकेट खेलती हैं। उनके मनपसंद खिलाड़ी हैं कपिल देव, ब्रायन लारा और सचिन तेंदुलकर। वह बड़े होकर एक सफल बल्लेबाज़ बनना चाहती हैं। उन्हें गेंदबाज़ी का भी शौक है और वह फिरकी गेंदबाज़ बनना चाहती हैं।

शालिनी गुप्ता ने क्रिकेट प्रशिक्षण कैम्प का विज्ञापन देखा और वह इस कैम्प में शामिल होना चाहती हैं।

करनैल सिंह स्टेडियम
पहाड़गंज, नई दिल्ली-110001
दूरभाष 24482865, 24484650(एक्स.नं.405)

क्रिकेट प्रशिक्षण कैम्प

करनैल सिंह स्टेडियम और दिल्ली क्रिकेट बोर्ड दो वर्ग समूहों, प्रत्येक वर्ग में 20 खिलाड़ियों के लिए जुलाई 2009 में प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कर रहा है।

प्रथम समूह 12-15 वर्ष
दूसरा समूह 16-18 वर्ष
(कुल 40 खिलाड़ी)

इच्छुक खिलाड़ी करनैल सिंह स्टेडियम या दिल्ली क्रिकेट बोर्ड, नई दिल्ली के काउन्टर पर अपने आवेदन पत्र समेत 1000 रूपए का पंजीकरण शुल्क जमा करा कर अपने नाम का पंजीकरण करा सकते हैं। पंजीकरण दिनांक 20 जुलाई 2009, प्रात 10.30 बजे से सायं 4.30 बजे तक किया जाएगा। प्रत्येक वर्ग में 20 विद्यार्थियों के पूरा होने तक प्रथम आओ प्रथम पाओ के आधार पर किया जाएगा। (शनिवार और रविवार अवकाश)

10.30 बजे से दोपहर 4.00 बजे तक कैम्प में प्रशिक्षण दिया जाएगा।
सभी खिलाड़ियों को अपनी निजी किट का प्रयोग करना होगा।
अभिभावकों और इच्छुक खिलाड़ियों को शिविर संबंधी बोर्ड के नियमों का पालन करना होगा।

© UCLES 2009

आप अपने को शालिनी गुप्ता मानकर नीचे दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

For Examiner's Use

आवेदन पत्र
दिल्ली क्रिकेट बोर्ड,
पहाड़गंज नई दिल्ली-110001
दूरभाष 24482865, 24484650(एक्स.नं.405)

नाम..

आयु - 12-15 ☐ 16-18 ☐

स्थायी पता ....
....

दूरभाष ....

पिछले कितने वर्षों से क्रिकेट में रूचि है ....

क्रिकेट के किस क्षेत्र में रूचि है,
बताइए ....
....
....
....

[अंक: 7]

For Examiner's Use

अभ्यास 3 प्रश्न 7–10

भारतीय त्यौहार तीज पर निम्नलिखित लेख पढ़िए।

अगले पृष्ठ पर दिए गए कार्य को निर्देशानुसार पूरा कीजिए।

झूमने और झूलने की हरियाली तीज

भारतीय त्यौहार धर्म, शांति और जीवन के उल्लास से जुड़े हुए हैं। उन्हीं त्यौहारों में से हरियाली तीज का त्यौहार ख़ासकर महिलाओं के उल्लास व उमंग का त्यौहार है, जो श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को उत्तर भारत में विशेष रूप से मनाया जाता है।

इस दिन महिलाएँ अपनी सहेलियों के साथ गीत, नृत्य एवं झूला झूलकर आनंदोत्सव मनाती हैं। हरियाली तीज का संबंध श्रावण मास में चारों ओर फैली हरियाली और वर्षा होने की वजह से पैदा हुई अच्छी फसल से यानी खुशहाली से भी है। इसी खुशी की वजह से स्त्रियाँ इस दिन हरे रंग के वस्त्र धारण करती हैं और हरे ही रंग की चूड़ियाँ पहनती हैं और साथ ही हाथों पर हरी-हरी मेंहदी लगाती हैं। तीज पर मेंहदी लगाने का भी विशेष महत्व है। महिलाएं हाथों पर विभिन्न प्रकार के डिजाइनों में मेंहदी लगवाती हैं और इसके अलावा पैरों में महावर भी लगाती हैं, जो उनके सुहाग की निशानी मानी जाती है। यही नहीं वे इस खुशी को पूरे सावन-भर झूला झूलते हुए गीत-मल्हार गाकर आनंदित होती हैं।

इन दिनों में विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों का भी भरपूर मज़ा लिया जाता है। एक ख़ास बात यह भी है कि आज के दिन शादीशुदा बेटियों के यहाँ सिंधारे के रूप में पकवान, गुजिया, घेवर, फैणी आदि भेजने का रिवाज होता है।

हमारा देश विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और परंपराओं को मानने वाला है, पर आश्चर्य है और विशेषता भी है कि हर धर्म समुदाय का त्यौहार सभी धर्मों और समुदायों के लोग हिल-मिलकर मनाते हैं। यह त्यौहार सामाजिक सदभाव के आधार हैं और इसलिए देश की अनेकता में एकता वाला देश कहा जाता है। यही हमारी राष्ट्रीय पहचान है और यही हमारी ताकत।

For Examiner's Use

आपको अपने स्कूल में हरियाली तीज पर एक निबंध लिखना है। निबंध को लिखने से पहले पाठांश के आधार पर नीचे दिए गए पहलूओं से जुड़ी बातों को संक्षेप में लिखिए।

7 तीज का महत्व

....

....

....[2]

8 रंग और वस्त्र

....

....

....[2]

9 सुहाग की निशानी

....

....

....[1]

10 खान-पान और गतिविधियाँ

....

....[2]

[अंक: 7]

अभ्यास 4 प्रश्न - 11

निम्नलिखित आलेख के आधार पर एक लेख लिखिए और बताइए कि फिल्म निर्माण किस रूप में बदल रहा है? आलेख की मुख्य बातों को अपने शब्दों में लिखिए। आपका आलेख 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

संगत बिन्दुओं के समावेश पर 6 अंक और भाषिक अभिव्यक्ति के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। पाठांश से वाक्य उतारना उचित नहीं है।

छोटे बजट की फिल्मों का नया अवतार

संजय लीला भंसाली, सुभाष घई, राकेश रोशन, यश चोपड़ा जैसे बड़े निर्माताओं की फिल्में बड़े जोख़िम पर लटकी रहती हैं, जो कभी सफल हो जाती हैं तो कभी पिट जाती हैं। इसके बावजूद राजश्री प्रोडक्शन जैसी फिल्म निर्माण कंपनी बड़े बजट की फिल्मों से परहेज़ नहीं करती, लेकिन महेश भट्ट, मधुर भंडारकर, प्रियदर्शन जैसे फिल्मकार छोटे बजट की फिल्मों को लेकर फिल्म बाज़ार की दुनिया में सफलता का झंडा लहरा रहे हैं। बदलते समय के साथ छोटे बजट की फिल्मों की सफलता का आलम यह है कि आज 25-50 लाख रूपए जेब में रखने वाले लोग भी फिल्म बनाने की हिम्मत जुटा लेते हैं और मल्टीप्लेक्स की मेहरबानी से फिल्में चला भी लेते हैं।

फिल्मों के सफल होने का पैमाना कभी बड़ा कलाकार होता था, कभी बड़ा बैनर तो कभी बड़ा बजट। मगर अब नए-नए कलाकारों को लेकर कुछ ही दिनों में कम बजट में फिल्में तैयार कर ली जाती हैं। अब वह जमाना लदता जा रहा है, जब बॉलीवुड में एक फिल्म बनने में सालों लग जाते थे और उनके जैसे बड़े निर्माता भी आज 'राज', 'पाप' जैसी छोटे बजट की फिल्में बना रहे हैं और फिल्में सफल भी हो रही हैं। फिल्मों का स्वरूप इस कदर बदला है कि अब इन फिल्मों का बजट ही नहीं, इनकी लंबाई भी कम हो गई है। अब तीन घंटे की फिल्म के लिए समय निकालना दर्शकों के लिए भी मुश्किल है और निर्माता दर्शकों की इस मुश्किल को देखते हुए डेढ़ से दो घंटे की फिल्में बनाने लगे हैं।

बदले समय में टिकटों की बिक्री का समीकरण भी बदल गया है। आज ज़रूरी नहीं है कि सिनेमाहॉल दर्शकों से खचाखच भरा हो। आज बेशक 30-35 फीसदी टिकटें बिक पाती हैं, लेकिन उसमें भी निर्माताओं को लाभ ही होता है। कभी निर्माता सिनेमाघर के टिकटों की बिक्री से अपनी फिल्म की कामयाबी का हिसाब लगाते थे। अगर फिल्म बड़े बजट या बड़े सितारों वाली है तो बाज़ार में आने से पहले ही आधे पैसे मिल जाते थे। लेकिन अब ऐसी स्थिति नहीं है। जिन फिल्मों को पूरे तामझाम के साथ बॉक्स ऑफिस पर प्रदर्शित किया गया। उनमें से अधिकांश फिसड्डी साबित हुई। यह निष्कर्ष वाकई आंखें खोल देने वाला है। इस साल 50 फिल्मों में से मुश्किल से छह फिल्में ही हिट हो पाईं। छोटे बजट की फिल्मों ने कई अल्पचर्चित कलाकारों को सुर्खिया दिलाई। इनमें से कई अभिनेताओं ने जमे-जमाये अभिनेताओं को भी बेहतरीन प्रदर्शन के मामले में पीछे छोड़ दिया। सिने प्रेमियों की बदलती फिल्म रुचियों को ध्यान में रखकर अनूठे नाम और अनूठी कथा वाली कई अभिनवधर्मी फिल्में आई हैं।

© UCLES 2009

For Examiner's Use

[10]

© UCLES 2009

[कृपया पृष्ठ पलटिए

खंड 2

अभ्यास 5 प्रश्न 12–19

राजस्थान के जनपद पर लिखे इस आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

राजस्थान के झरोखे से झलकता झालावाड़

झालावाड़ मालवा के पठार के छोर पर बसा एक जनपद है, जिसके अंदर झालावाड़ और झालरापाटन नामक जुड़वाँ शहर अपने आप में एक आदर्श पर्यटक स्थल हैं। दोनों शहरों की स्थापना 18वीं शताब्दी के अंत में झाला राजपूतों द्वारा की गई थी। दोनों शहरों के मध्य करीब 7 कि.मी. की दूरी है, पर आजादी से पूर्व दोनों शहर झाला वंश के राजाओं की एक समृद्ध रियासत का हिस्सा थे।

झालावाड़ शहर के पर्यटन आकर्षणों में से एक है गढ़ महल जो झाला राजाओं का भव्य महल था। शहर के मध्य स्थित इस महल के तीन कलात्मक द्वार हैं। महल का अग्रभाग चार मंजिला है, जिसमें मेहराबों, झरोखों तथा गुम्बदों का अनुपातिक विन्यास देखने योग्य है। परिसर में नक्कारखाने के निकट एक पुरातत्व संग्रहालय भी देखने योग्य है। महल का निर्माण 1838 में राज राणा मदन सिंह द्वारा शुरू करवाया गया था, जिसे पृथ्वीसिंह ने पूरा करवाया। 1921 में राजा भवानी सिंह ने महल के पिछले भाग में एक नाट्य शाला का निर्माण करवाया। इसके निर्माण में यूरोपियन ओपेरा शैली का विशेष ध्यान रखा गया था।

शहर से करीब 6 कि.मी. दूर कृष्ण सागर नामक विशाल सरोवर है, जो एकांतप्रिय लोगों को बहुत पसंद आता है। यहाँ किनारे पर एक काष्ठ निर्मित इमारत है। इसे रैन बसेरा कहते हैं। यह इमारत महाराज राजेन्द्र सिंह ने ग्रीष्मकालीन आवास के लिए बनवाई थी। यहाँ पर स्थित मंदिर भी शहर की पहचान माने जाते हैं। अतः झालारापाटन को घंटियों का शहर भी कहा जाता है। शहर के मध्य स्थित सूर्य मंदिर झालारापाटन का प्रमुख दर्शनीय स्थल है और वास्तुकला की दृष्टि से अहम भी। इसका निर्माण 10वीं शताब्दी में मालवा के परमार वंशी राजाओं ने करवाया था। हालांकि यह सूर्य मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। लेकिन मंदिर के गर्भगृह में भगवान विष्णु की प्रतिमा विराजमान है। इसलिए इसे पद्मनाभ मंदिर भी कहा जाता है। सूर्य मंदिर से कुछ दूर ही प्रसिद्ध शांतिनाथ मंदिर स्थित है। 11वीं शताब्दी में निर्मित इस जैन मंदिर के गर्भगृह में भगवान शांतिपथ की सौम्य प्रतिमा विराजमान है, जो 11 फुट ऊँची है तथा काले पत्थर से निर्मित है।

झालारापाटन में भी एक विस्तृत सरोवर है, जिसे गोमती सागर कहते हैं। इसके तट पर द्वारिकाधीश मंदिर एक दर्शनीय स्थान है। झाला राजपूतों के कुल देवता श्री द्वारिकाधीश को समर्पित मंदिर 1796 में झाला जालिम सिंह द्वारा बनवाया गया था। शहर के एक छोर पर ऊँची पहाड़ी पर नौलखा किला एक और पर्यटन आकर्षण है। यह एक अर्धनिर्मित किला है, जिसका निर्माण राज राणा पृथ्वी सिंह द्वारा 1860 में शुरू करवाया गया था। इतने सारे पर्यटन आयामों को अपने में समेटे झालावाड़ आज पर्यटकों में अपनी अलग पहचान बना चुका है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही और ग़लत का निशान लगाकर दीजिए। यदि वाक्य गलत है तो पाठांश के आधार पर वह वाक्य भी लिखिए जिससे वाक्य सही साबित होता है।

For Examiner's Use

	सही	ग़लत
उदाहरण - झालावाड़ और झालरापाटन एक प्रमुख पर्यटक स्थल है।	☐	✔

औचित्य - झालावाड़ और झालरापाटन जुड़वाँ शहर है जो पर्यटन का प्रमुख स्थान है।

12 गढ़ महल के गुम्बद और मेहराबों का आनुपातिक विन्यास सुंदर है। ☐ ☐

....

13 संग्रहालय का निर्माण 1838 में राज राणा मदन सिंह द्वारा करवाया गया था ☐ ☐

....

14 राजा भवानी सिंह ने महल के सामने के भाग में एक नाट्य शाला का निर्माण करवाया। ☐ ☐

....

15 रैन बसेरे का निर्माण ग्रीष्मकालीन आवास के लिए करवाया गया। ☐ ☐

....

16 क्यों झालारापाटन को घंटियों का शहर कहते हैं?

....[1]

17 सूर्य मंदिर में किस देवता की प्रतिमा स्थापित है?

....[1]

18 झाला जालिम सिंह ने 1796 में क्या किया?

....[1]

19 किस इमारत का निर्माण पूरा नहीं हुआ?

....[1]

[अंक:10]

अभ्यास 6

प्रदूषण की रोकथाम के लिए बनाइए 'जगत जाल' (वेबसाइट) आपके शहर में प्रदूषण कमी के लिए स्थानीय प्रशासन ने कई नियम और पाबंदियों को लागू किया है। परन्तु इन पाबंदियों के प्रति आम लोगों में उदासीनता है। आप शहर के लोगों में इन पाबंदियों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए एक जगत जाल बनाने की योजना के बारे में लिखिए और बताइए इस जगत जाल में किन पहलूओं को उजागर किया जाना चाहिए ताकि प्रदूषण की रोकथाम के प्रति आम लोगों को जागरूक किया जा सके।

आपका पत्र 150 या 200 शब्दों से ज़्यादा नहीं होना चाहिए।
लिखित पत्र पर अंक विषय संबंधी अंर्तवस्तु, शैली और सही भाषा लिखने पर दिए जाएंगे।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

[अंक: 20]

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

University of Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.

© UCLES 2009